गुटका
समतावाद नित नियम

संगत समतावाद (रज़ि) 135003

समता योग आश्रम, जगाधरी

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् सर्वाधार
समता अपार शक्ति

गुटका
समतावाद नित नियम

श्री मुख वाक् अमृत
सत्पुरुष श्री मंगतराम जी महाराज

प्रकाशक
संगत समतावाद (रज़ि) 135003
समता योग आश्रम, जगाधरी

विषय सूची

1.	निवेदन	5
2.	परिचय गुरुदेव	9
3.	महामन्त्र	13
4.	मंगलाचरण	14
5.	प्रार्थना	15
6.	सिमरन दीपक	18
7.	सार उपदेश	44
8.	अरदास	46
9.	सत् स्वरूप चिंतवन की भावनाएं	48
10.	आरती	49
11.	समता मंगल	51

नोट : गुटका समतावाद नित नियम में प्रकाशित वाणी संख्या ग्रन्थ श्री समता प्रकाश का ही अंश है।

सत्पुरुष श्री मंगतराम जी महाराज

जन्म	:	24 नवम्बर, सन् 1903
जन्म स्थान	:	गंगोठिया ब्राह्मणां, तहसील कहूटा ज़िला – रावलपिण्डी, (पाकिस्तान)
महासमाधि	:	4 फरवरी, सन् 1954 (अमृतसर)

निवेदन

यह अनुभवी वाणी मुख वाक् अमृत श्री सत्‌गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी महाराज ने संसारियों के उद्धार हेतु ईश्वरी आज्ञा से उच्चारण फ़रमाई है। इसके नित–प्रति स्वाध्याय से न केवल मन स्थिर रहता है, बल्कि सुख और शान्ति का अनुभव भी होता है। इस '**सिमरण दीपक**' वाणी का उच्चारण श्री सत्‌गुरुदेव ने जनवरी 1944 में काहनूवान ज़िला गुरदासपुर (पंजाब) में एक प्रेमी हकीम जसवन्त राय की प्रार्थना पर किया।

प्रेमी : महाराज जी! रोज़ाना पाठ के वास्ते थोड़ी वाणी अलग गुटके की शक्ल में होनी चाहिए। जैसे जपजी साहब की वाणी है।

गुरुदेव : प्रेमियों! सांग न बनाओ। दूसरों की नकल क्यों करते हो।

प्रेमी : महाराज जी! आज कल के ज़माने के साथ

भी तो चलना है। ऐसी चीज़ हो जो जेब में पड़ी रहे।

गुरुदेव : अच्छा! ईश्वर आज्ञा से जो विचार रात को आयेगा, उसे सुबह देख लेना। उसी रात को दस बजे जब सब प्रेमी चले गये, तो गुरुदेव ने सेवक भगत बनारसी दास को आज्ञा फ़रमाई कि तुम भी सो जाओ। रात को जल्दी उठना होगा। प्रेमी जसवन्त राय का प्रेम पूरा करना है।

आज्ञा पाते ही भगत जी सो गये। रात दो बजे गुरुदेव ने स्वयं उनको जगाया और कापी कलम निकाल कर लिखने की आज्ञा देते हुए फ़रमायाः– ''प्रेमी! ऊपर '**सिमरण दीपक**' लिखो।'' तत्पश्चात् गुरुदेव ने वाणी का उच्चारण स्वयं समाधि स्थित होकर करना शुरू कर दिया। भगत जी साथ–

साथ लिखते गये।

दूसरे दिन प्रातः चाय सेवन के पश्चात् रात को लिखी वाणी सुनाने का आदेश दिया। सुनने के बाद फ़रमाया:-

गुरुदेव : प्रेमी! क्या समझा है?

भगत जी: महाराज जी! अगर चित्त देकर केवल इन वचनों को विचारा जाये तो यह ही काफी हैं। मगर इतना पढ़ने के बावजूद मन नहीं मानता।

गुरुदेव : प्रेमी! लाखों पद ईश्वर महिमा के, वैराग के, अनुराग के, साधन के, प्रेम के, विश्वास के महापुरुषों ने उच्चारण फ़रमाये हैं, उन में से अगर कोई एक पद भी चित्त वृत्ति पकड़ ले तो मन रूपी दुर्मति को त्याग करने के यतन में लग जाता है। किसी को वैराग्य के पद अच्छे लगते हैं, किसी को प्रेम अनुराग के, किसी को

साधना के, हर एक जीव के वास्ते सत्पुरुष इख़लाकी, रूहानी, ख़ुराक छोड़ जाते हैं। लोभ मोह में फंसा हुआ जीव बड़ी मुश्किल से सत्मार्ग की सूझ प्राप्त कर सकता है।

माया भरम विकार में,
नित ही जीव भरमाये।
'मंगत' भरमन तब मिटे,
जब सत नाम ध्याये।।

सिमरन पूरा ज्ञान है,
सिमरन पूर्ण विवेक।
'मंगत' एह बिध सिमरिये,
विसरे घड़ी न एक।।

(संगत समतावाद)

परिचय सत्गुरुदेव

सत का मण्डन पाखण्ड खण्डन,
सत पुरुष जग आये।
पाप विषाद का नाश करन ते,
केते दु:ख उठाये।।

ब्रह्मा विषन महेश्वर,
सब ही सन्त सरूप।
'मंगत' गुरमुख साधू आया,
धर नारायण का रूप।।

(ग्रन्थ श्री समता प्रकाश)

पूज्य पाद श्री सत्गुरुदेव महात्मा मंगतराम जी आधुनिक युग के सिद्ध योगी हुए। आपका आगमन **24 नवम्बर 1903** तदानुसार 9 मघर संवत् 1960 दिन मंगलवार, शुभ स्थान गंगोठियां ब्राह्मणा, जिला रावलपिंडी (पाकिस्तान) के एक कुलीन ब्राह्मण परिवार में हुआ। आप बाल ब्रह्मचारी, पूर्ण योगी, परम त्यागी और ब्रह्मनिष्ठ आत्मदर्शी महापुरुष हुए। **13 वर्ष** की छोटी सी आयु में ही आप को **आत्म साक्षात्कार** हुआ। तत्पश्चात् लगभग 18 साल तक आपने गुप्त रूप में कठिन तपस्या की। उस के बाद जगह-ब-जगह का भ्रमण करके जिज्ञासु जनता का उद्धार करते रहे। भ्रमण के दौरान आपने संसारियों के कल्याण के लिए अनुभवी वाणी और अमृत वचन उच्चारण फ़रमाये। एक पवित्र जीवन का आदर्श आपने जनता के सम्मुख रखा ,जिस में कहनी, रहनी एक समान थी, जिस में न किसी भोग सामग्री की

लालसा, न पैसे का मोह, न मान–बढ़ाई की इच्छा। आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति से सम्बन्ध रखने वाले कई विषय जैसे सत् क्या है?, असत् क्या है?, ब्रह्म, जीव और प्रकृति का क्या भेद है? कर्म और नेहकर्मता, भगति, ज्ञान, योग, सिमरण, ध्यान इत्यादि। इन सब तथा अन्य कई विषयों पर सत्गुरुदेव जी ने बड़े शुद्ध यथार्थ ज्ञान युक्त, निष्पक्ष विचार प्रगट फ़रमाये हैं। सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग और सत् सिमरण, यह पाँच आत्मिक व सामाजिक उन्नति के मुख्य साधन आपने जनता के सम्मुख रखे।

श्री सत्गुरुदेव जी ने वाणी और वचनों द्वारा बडे गूढ़ से गूढ़ भावों को, अति सरल और सुन्दर भाषा में प्रस्तुत किया। यह मूल वाणी '**ग्रन्थ श्री समता प्रकाश**' के रूप में संकलित हो चुकी है, इस के अतिरिक्त आप के प्रवचन '**ग्रन्थ श्री समता विलास**' में प्रकाशित हो चुके हैं। इन का मनन और निध्यासन

जीवन में बेअन्त ठण्डक, शुद्धता और प्रकाश के देने वाला है।

4 फरवरी, 1954 वीरवार के दिन **50 वर्ष** की आयु में आप गुरु नगरी अमृतसर में इस नश्वर शरीर का त्याग करके ब्रह्म तत्त में लीन हो गये।

महामन्त्र

ओ३म् ब्रह्म सत्यम् निरंकार
अजन्मा अद्वैत पुरखा सर्व व्यापक
कल्याण मूरत परमेश्वराय नमस्तं।।

।। मंगलाचरण ।।

नारायन पद बंदिये, ताप तपन होये दूर।
नमो नमो नित चरन को, जो सरब आधार हज़ूर।।
हिरदे सिमरो नाम को, नित चरनी करो डण्डौत।
सत् शरधा से पूजिये, रख सतगुरु की ओट।।
दुविधा मिटे मंगल होये, जो चरण कंवल चित धार।
रिद्ध सिद्ध आवे घर माहीं, पावें जय जय कार।।
साचा ठाकर सरब समराथा, अपरम शकत अपार।
'मंगत' कीजे बन्दना, नित चरनी बलिहार।।
सत मारग सोझी मिली, तन मन भया निहाल।
गवन मिटी संसार की, सतगुरु मिले दयाल।।
बार बार करूँ बन्दना, सतगुर चरनी माईं।
'मंगत' सतगुरु भेंट से, फेर गरभ नहीं आईं।।

प्रार्थना

तूँ दीन दयाल सरब का स्वामी।
पतित पावन तूँ परम सुख धामी।।
अनन्त सरूप शक्त अनन्त।
सरब पसरया तूँ ही भगवन्त।।
अनन्त महिमा तेरा विवेक।
अनन्त सरूप तेरा प्रभ एक।।
तृण तृण अन्दर तूँ समाया।
अखण्ड सरूप तेरा प्रभ राया।।
अकथ कथा विज्ञान सरूप।
परम पुरख तूँ अत अनूप।।
जब देखूँ प्रभ अन्तर माईं।
तूँ एक समाया पार गोसांईं।।
अपना कौतक आप बिस्तारी।
अचरज लेखा तेरा पार मुरारी।।

नित ही नित करूँ अरदास।
सत ठाकुर में करूँ निवास।।
तूँ रखयक सरब जग देवा।
पल पल माँगू निर्मल सेवा।।
दात करो अपनी प्रभ राये।
तेरी कथा मन माँही समाये।।
नित ही बाछूँ चरनी धूड़।
दीनदयाल समरथ हज़ूर।।
अन्तर बाहर तेरा जस गाऊँ।
दिवस रैन तेरी कीरत ध्याऊँ।।
तूँ समरथ ठाकर बेपरवाहे।
बारम्बार महिमा चित गाये।।
नाम ध्यान पाऊँ तत्त मूल।
तूँ व्याप रहया सूक्षम अस्थूल।।
प्रभ दाते तेरी हूँ सरना।
तूँ ठाकर हैं कारन करना।।

अत वडयाई तेरी प्रभ एक।
कथ कथ थाके सिद्ध मुनी अनेक।।
राखनहार तूँ आप दयाल।
सरब जियाँ पर होये किरपाल।।
अपने भाने तूँ करे नित दात।
निर्मल ध्यान तेरे चरन समात।।
परम प्रीत रहे चित्त माईं।
तूँ ठाकर परम सुखथाईं।
नित हूँ मैं सरनागती,
पद परम पुरख प्रभराये।
'मंगत' की सुन बेनती,
नित प्रभ जी होत सहाये।।2।।

सिमरन दीपक

आतम सरूप सिमर मन माहीं।
दुविधा दूर मंगल को पाई।।
जग जीवन की यह निर्मल सार।
आतम तत्त का जो मिले विचार।।
महा विकराल दुर्मत जाए रोग।
निर्मल शान्त का पाए संजोग।।
वासना कर्म का नासे ताप।
नेहकर्म सरूप आत्म नित जाप।।
जीवन तत्त चेतन परगास।
नित आनन्द सरूप अविनास।।
सत शरधा से हिये चितार।
परमानन्द तत्त जोत निरंकार।।
घट घट व्यापक सरब भरपूरे।
नित रखयक सत रूप हज़ूरे।।

निर्मल प्रीत से सदा ध्याओ।
डोलन त्याग नेहचल गत पाओ।।
कर्ता हर्ता सरब सुख दाता।
अबगत रूप भज पुरख विधाता।।
नित निहथावाँ मन आवे जाए।
नाना भोग करम लिपटाए।।
आसा मनसा अत दीरघ ताप।
अनर्थ कल्पना बहु भाँत चित थाप।।
एक पलक न आवे धीर।
करम वासना देवे अत पीड़।।
मोह माया में जले दिन रात।
बिन तत्त ज्ञान न मिटे सन्ताप।।
उज्जल नीती ये निर्मल करम।
आत्म पूज जग जीवन धरम।।
सत साधू मिल सूझ विवेक।
दुबधा त्याग सिमर प्रभ एक।।

नाम जपत सब कलह विनास।
अखण्ड सरूप तत्त पाएँ परगास।।
निर्भय धाम परस सत ठौर।
एक नाम नित जाप हज़ूर।।
प्रभ की आज्ञा मन माहीं विचार।
जो वरतावे सो सुख कर धार।।
साची भगती अन्तर आराध।
पल पल निर्मल नाम को साध।।
तन मन धन सरब का दाता।
पूरन पुरख सरब घट जाता।।
नाम का सिमरन देवे चित्त धीर।
काल करम की हरे तकसीर।।
सरब आनन्द सरब का धाम।
मिल सतगुरू जप निर्मल नाम।।
नाम ध्यान सब गुण की खान।
अन्तर परस तत्त शब्द निर्वान।।

असत भरम जाए दूजा भाओ।
एको एक सरब लख पाओ।।
एक नाम पाए जीवन आधार।
'मंगत' जप जप बारम्बार।। 1547।।
नाम सिमरन अत निर्मल धन।
साची भगती सब मेटे विघन।।
गुरमुख मन में पाई जयकार।
सिमर सिमर साचा करतार।।
अत ही महिमा मन रही समाए।
बिन प्रभ रूप सब काल दिखाए।।
आवे जावे ये करम का जाल।
साचा नाम जप दीन दयाल।।
देह अभिमान त्याग दु:ख मूल।
साचा ठाकर पलक ना भूल।।
कर्ता भाओ त्याग अन्धकार।
प्रभ की आज्ञा पल पल विचार।।

सकले दोष मन के होएँ नास।
अन्तरगत पाएँ आत्म परगास।।
साचा ठौर जग जीवन रूप।
परस नारायन अत शकत अनूप।।
मन का भरमन जो अत संताप।
नाम जपत सुख सहज समात।।
ऐसा नाम ध्याओ नित नीत।
साध बचन राखो परतीत।।
भव मारग में केवल यह सार।
साची भगत प्रभ हिये चितार।।
बिन सत नाम मन अधिक भ्रम थापे।
तत्त विसार नित करम गत जापे।।
करमफल इच्छया में निश्चय नित धारी।
भोग सोग में अत पाए खवारी।।
आस आस में जन्मे मरे।
काल चक्कर में रूप बहु धरे।।

ये ही रचना है सकल संसार।
पाए ना धीर यह जीव गँवार।।
राजे राणे गुनी गुनवन्त।
चार खानी सब जीव भरमन्त।।
आतम सूझ केवल तत्त सार।
अखण्ड अद्वैत पुरख निर्धार।।
जाँ को परस पावें प्रसन्नता।
एको देखें रूप अनन्ता।।
जलन मिटे मन पावे शान्त।
आत्म ज्ञान सब हरे भरान्त।।
निर्भय जीवन अन्तर मुख ध्यान।
पायो ठाकर आनन्द की खान।।
साचे नाम का गायो गीत।
मन में राख पूरन परतीत।।
आत्म तीर्थ में करो अस्नान।
अन्तर परसें तत्त शान्त निर्वान।।

नाम आधार हो नाम परायन।
नाम की महिमा करें चित्त गायन।।
तृष्णा नाश होवें निर्वास।
घट घट देखें प्रभ परकास।।
जानन योग केवल इक नाम।
'मंगत' सिमर के ले बिसराम।।1548।।
सत साजन सत कार कमाओ।
प्रभ अपने को पल पल ध्याओ।।
भरमन त्याग घट अन्तर समाई।
तत्त गत रूप की लखे प्रभताई।।
वासना करम से भयो विरक्ता।
ज्ञान विज्ञान सुख सहज संजुगता।।
विरत रहित मन निर्मल भयो।
साची शोभा प्रभ की लख लयो।।
अचरज कथा नहीं पारावार।
अकथ ज्ञान अलेख निरधार।।

जिस जन घट की सोझी पाई।
सरब का ठाकर घट माहीं दरसाई।।
भगती प्रेम से पायो विश्वासा।
दुर्मत त्याग लियो इकनाम भरवासा।।
मन करम देही से उपरस होई।
साचे नाम की कथा परोई।।
उठत बैठत प्रण एको धारी।
पलक ना विसरे सत रूप मुरारी।।
अनन भगत से मन रीझावे।
साचा शब्द चित माहीं कमावे।।
दूजा विसरे इक सोझी पावे।
चंचल त्याग मन नाम समावे।।
प्रेम खुमारी में रहे मतवाला।
जप जप जीवे इक नाम दयाला।।
और आस ना मन में रहाई।
निर्मल नाम इक सार कमाई।।

हंग विकार जाए भ्रम मूल।
एको देखे सूक्षम अस्थूल।।
सत सील चित भाओ निष्कामा।
शबद अखण्ड में ले बिसरामा।।
काम क्रोध चित भरमत टारी।
निमख निमख प्रभ नाम चितारी।।
सत सिमरन में मन रहे समाई।
कथा बिस्माद घर माहीं लखाई।।
ज्ञान विज्ञान तत्त भयो परगासा।
निर्मल भगती में लियो निवासा।
अन्तर चानन आत्म सूझा।
भाओ भगत से पाई पूजा।।
सब कुछ तिस से जानन पाया।
सरब में पसरयो पूरन प्रभ राया।।
देह मण्डल की गती विचारी।
अचरज महिमा घर लखी मुरारी।।

सब में व्यापक पर रहे अलेपा।
पार पुरख का अपरम लेखा।।
सकल आकार माया रचनाई।।
पाँच भूत का खेल दिखलाई।।
साचा स्वामी घट रहे न्यारा।
जिस सूझे तिस भाग अपारा।।
तत्त गत सूझ मन भयो लवलीना।
'मंगत' ठाकर सरब घट चीना।।1549।।
देह मन्दिर में भयो उजियारा।
नेहचल बुद्धि लखे ज्ञान आपारा।।
आत्म जोत शबद निर्वानी।
काया कोट में करी पछानी।।
अन्तर सुरती आकाश समाई।
शबद पुरख की शोभा पाई।।
महिमा गाए के भई निहाल।
अपना आप पाए रूप अकाल।।

देह इन्द्री मन से अलेपा।
शबद सरूप पाए पुरख अलेखा।।
केवल सुरती सत गती विचारे।
चेतन परगास सरब उजियारे।।
तिस उजियारे में रहे लवलीना।
काल करम का ताप होए छीना।।
जाप अजपा नित नित जापे।
करम त्याग नेहकरमत थापे।।
वासना त्याग अकल्पत होई।
आतम ध्यान में सुरत समोई।।
काल जाल सकल दिखलायो।
अपनी भरमन का लेख लखायो।।
भरमन त्याग सुतन्तर भयो।
केवल आतम सरब दरसीयो।।
एको देव सरब तिस पूजा।
परम पुरुष सरब गत सूझा।।

अकथ कथा मन माहीं कथाए।
प्रभ की महिमा नहीं वरनी जाए।।
अन्तर में अन्तर सुख पेखे।
दीन दयाल की महिमा लेखे।।
देह त्याग के भयो निरधार।
तिस जन लागे नहीं करम विकार।।
नित सुतन्तर नित अतीता।
अपना आप नित जपे पुनीता।।
दूजा भाओ सब कल्पना टारी।
शब्दे शब्द मिल शोभा विचारी।।
अन्तर इक बाहिर इक देखे।
एको एक सरब करे लेखे।।
वासना नास मन भयो निर्वाना।
नेहकरम सरूप पायो शबद ध्याना।।
अचरज लीला आपार समाई।
रंचक महिमा नहीं वरनी जाई।।

नित आनन्द सरब परकाशा।
सिमर स्वामी अजर अबनाशा।।
नित नित कीरत तिस की सूझे।
अनन्त शकत को पल पल पूजे।।
महा ज्ञानी सो तत्तवेता।
आतम ज्ञान पायो अकथ अलेखा।।
तिस की गत तेई जन जाने।
अपना आप सरब रंग माने।।
द्वैत भरम सब गयो गुबारा।
'मंगत' पायो तत्त रूप आपारा।।1550।।
शबद तत्त में सुरत समाई।
तृष्णा जाल रह्यो भरम ना काई।।
सहज सुभाए निज रूप गुन गावे।
आपार महिमा मन माहीं लखावे।।
अमरत पीके तृपत चित्त भयो।
काल करम का संसा गयो।।

अकरम सरूप जोत निर्वानी।
निज सरूप पायो परम निधानी।।
नित अतीत नित निरवासा।
अभय गत रुप नित परगासा।।
अपना आप तत्त भेद लखायो।
आवागवन का चक्कर मिटायो।।
देह अन्तर शबद तत्त बोले।
सुरत अडोल होए रसना तोले।।
योग आरूढ़ तत्त समता बूझे।
करम का खेद पलक नहीं सूझे।।
नित निर्द्वन्द नित निरधारा।
निज सरूप पायो अपरम आपारा।।
एक ध्यान सुरत नित राखे।
महा परसाद शबद रस चाखे।।
इन्द्री विकार नहीं चित्त को छेदे।
अबगत शबद में सुरता बेधे।।

दूजा भाओ नहीं व्यापी काला।
सरब व्यापक रूप घट भाला।।
नित नित ताँ में सुरत समाई।
एको एक सरब दरसाई।।
तृष्ना भरम नहीं अन्तर व्यापे।
शब्द आनन्द में सुरता थापे।।
सुन्न महासुन्न के परले पार।
तत्त निर्वान घट कियो विचार।।
केवल प्रीत मन पाई परतीता।
आलख शब्द जप पुरख पुनीता।।
देह कोट से भिन्न कर जाता।
साखी रूप तत्त शब्द पछाता।।
नित अजन्मा नित निराकारा।
तत्त सरूप पायो अपरम अपारा।।
बिस्माद कथा में मन गलताना।
अन्तर पायो सहज ध्याना।।

त्रैगुन मनसा सकल निवारी
आलख शब्द परस निरधारी।।
मन इन्द्री से नित न्यारा।
गुनातीत तत्त शब्द विचारा।।
तत्त विचार के निर्भय समाई।
अपनी पूजा आपे पाई।।
अखण्ड अद्वैत नित असंगा।
सरब सरूप शब्द निरद्वन्दा।।
ताँ में सुरती लीन समाई।
दूजा भाओ माया विसराई।।
अचिन्त सरूप आतम घर पूजा।
'मंगत' सरब सरूप नारायन सूझा।।1551।।
द्वन्द करम नहीं चित्त को छेदे।
शब्द ध्यान हरे सब खेदे।।
हान लाभ सब दूषना टारी।
वीतराग पायो पुरख मुरारी।।

सरब का साखी नित परगासा।
सरब आधार पुरख निरवासा।।
सरब परकिरती का जीवन जोई।
सरब ईश तत्त शब्द लखोई।।
आनन्दखानी सम परकाशा।
अनादी सरूप निज आतम भासा।।
अन्तर महमा अचरज पाई।
कथ कथ लीला अगोचर ध्याई।।
सिमर सिमर तत्त रूप अखण्डा।
आतम जोत सरब परचण्डा।।
सदा अतीत सदा निरदोखा।
नित आनन्द तत्त शबद अनूपा।।
नित ध्याओ नित गुन गायो।
सरब निधान निज रूप लखायो।।
आपामती गई भ्रम छाया।
घर में केवल सत रूप लखाया।।

सरब आद सनातन जोई।
अखण्ड शब्द तत्त रूप लखोई।।
परे परेरे सो ही देखा।
घट घट अन्तर सोही पेखा।।
सरब ज्ञाता सरब आधारी।
निज सरूप पायो शब्द आपारी।।
पल–पल सुरती तिस में खेले।
निर्भय धाम में आपा मेले।।
आकार विरत से भयो अलेपा।
निराकार का पायो विवेका।।
निरविखाद तत्त शबद अबनाशी।
अनन्त सरूप सरब परकाशी।।
एह बिध रहनी जिस जन पाई।
आलख आपार घर माहीं ध्याई।।
सुन्न कपाली नाद किलकारे।
महमा आपार नहीं जाई विचारे।।

पद निरवाच शुन्यंगकारा।
सरब कल्याण तत्त शब्द अपारा।।
चेतन परगास निज आतम देवा।।
सतगुरु सेव पाया तत्त भेवा।।
नित अकल्पत नित शान्त समाई।
शबद को पूज परम गत पाई।।
तृष्णा काल चक्कर भयो नासा।
सर्वाजीत पायो प्रभ अबनासा।।
तत्त अद्वैत सरबगत पूरा।
सरब के अन्तर रहे भरपूरा।।
अन्तर में पाई परसन्ता।
परमानन्द इक चित्त जपन्ता।।
अती पुनीत तत्त शब्द निज देवा।
'मंगत' भाग से पाई ये सेवा।।1552।।
एको ठाकर सरब समाई।
सरब जगत तिस की प्रभताई।।

ऐसी महिमा करो विचार।
भव दुस्तर से उतरें पार।।
अकथ अगैह अलोक अकाला।
अजय अभय सरब मूल दयाला।।
सरब आधार सरब परकास।
सरब सरूप तत्त आतम निर्वास।।
अनगिनत महिमा नहीं पारावार।
साखी पुरख सिमर निरंकार।।
तत्त गत अपना रूप पछान।
भरम माया सब त्याग गुमान।।
अपनी कल्पत आप निवार।
अपना रूप खोज निरधार।।
द्वन्द जाए सब करम का खेदा।
एको परस तत्त शबद अभेदा।।
निर्मल जुगती अन्तर धार।
जीवन तत्त करो विचार।।

पांच तत्त देही का कोट।
तिस में पेख अत निर्मल जोत।।
सो ही रूप सरूप आपारा।
तिसको सिमर पावें जैकारा।।
साचा सिमरन साचा ये ज्ञान।
साची पूजा साचा ये ध्यान।।
ज्ञान विज्ञान से पूजो सत देवा।
मिल सतगुरु पाओ निर्मल सेवा।।
सिद्ध मुनी तपीशर ध्यायें।
देव अवतार नबी जस गायें।।
अन्तर सो बाहिर भी सोई।
अन्तर दृष्ट हो भेद लखोई।।
भरम अगन होवे चित्त नास।
अन्तरमुख सतनाम उपास।।
खुले कपाट चानन घर देखे।
एको स्वामी सरब घट लेखे।।

सरब ज्ञान की सार लखाये।
साचा साहिब घर परगट ध्याये।।
सत पुरुषारथ ये जीवन सार।
साचा नाम जप बारमबार।।
नाम जपत अगम कला परगासी।
देह मन्दर में मिले अबनासी।।
सेव सेव पायो सुख पूर।
अबगत शोभा सतनाम हज़ूर।।
साध चरन से जाऊं बलिहार।
जां से पाऊं सतनाम विचार।।
हिरदे अन्दर प्रीत कमाऊँ।
सरब जीयाँ की सेव लखाऊँ।।
सरब स्वामी घट में दरसाये।
पूरन भाग सत धाम समाये।।
जाँ से आये ताँ कियो बिसरामा।
'मंगत' पद निर्वान लखा निज धामा।।1553।।

निर्भय धाम की रसना खाई।
भरम वासना से मन तृप्ताई।।
भव मारग सब पूरन भयो।
आलख पुरख शबद लख लयो।।
अन्तर ध्यान में सुन्न समाई।
परमानन्द केवल दरसाई।।
सकल मनोरथ की एको सार।
सकल यत्न का निरना आपार।।
मन सिमरे सतनाम हज़ूर।
भरम माया होवे दु:ख दूर।।
निर्मल प्रीत से नाम कमाओ।
साची सीख जगत में पाओ।।
नाम बिना मन नित डोलावे।
जेती घाले एता दु:ख पावे।।
ओड़क चले जग से निरासा।
करम भोग नहीं मिटे पियासा।।

सतपुरुषों की सीख चित्त पेख।
निर्भय रूप नारायन लेख।।
सकले संकट पल होएँ नास।
साची प्रीत जपें अबनाश।।
देही सुख त्याग गुबार।
पर उपकारी जीवन धार।।
देह के सुख छिन नाश हो जाएँ।
राजे राने अन्त पछताएँ।।
साचा सुख प्रभ रूप पहचान।
पुरख अविनाशी तत्त निर्वान।।
अन्तर बाहिर जो नित रखवारी।
सिमर दयाल तत्त किरपा धारी।।
झूठी आसा करम का भोग।
आवागवन का दे संजोग।।
साचा नाम अन्तर मन राख।
तृपत समावें सुन निर्मल साख।।

मारग ज्ञान में उठ के जाग।
पूरन प्रभ का पाओ अनुराग।।
मन निर्मल इक नाम से होए।
गुरमुख साजन जो सार परोए।।
अमरत रसना केवल इक नाम।
हरजन सिमर के ले बिसराम।।
साखी जोत होई परगास।
अन्तरमुख में लियो निवास।।
जगत संग्राम से विजय लखाई।
मूल पहचान के मूल समाई।।
गाओ कीरत प्रभ पारगरामी।
मिले संतोख जप अन्तरयामी।।
सरब सिद्धान्त सरब की सार।
केवल नाम प्रभ हीये चितार।।
साची सेवा नित सत्संग प्रीती।
पल पल परसो तत्त ज्ञान की नीति।।

मारग ज्ञान विचार के,
नित सतनाम में रहो परवीन।
'मंगत' सिमरन दीपक उजाला करे,
सब भरमन होए चित्त छीन।।1554।।

सार उपदेश

मान त्यागी जग को जीते,
माया त्यागी देसा।
मोह त्यागी पाए बैरागा,
तत्तरूप करे परवेसा।।
काम त्यागी प्रभ रसना पीवे,
चित्त सहज समाध पछानी।
लोभ त्यागी पाए छतर संतोखा,
सतनाम की सूझ बखानी।।
क्रोध त्यागी प्रेम को परसे,
सबसे साँझ बनाई।
पर का कष्ट हरे दिन रैना,
सत मारग धरम लखाई।।
पांच विकार महा दुखदाई,
जले सकल संसारा।

परमारथ परतीत बिन,
नहीं जीव पावे निस्तारा।।
जेते दोष जोई जन त्यागे,
सो एता सुगड़ सुजाना।
मारग उन्नती में सो लागा,
जग जीवन सार पहचाना।।
सतगुरु सीख में निश्चा राखे,
सब मन के भरम निवारे।
झूठ देही की ममता त्यागे,
नित सरजनहार चितारे।।
पाँच विषय का मूल विनासे,
जब आतम तीरथ नहाई।
दुर्मत त्याग सुख सहज समाए,
परमगती सो पाई।।
नित ही जीवन करो सुतन्तर,
सत तत्त रूप पछानो।
'मंगत' अन्तर होए परगासा,
पद परस शान्त निर्वानो।।1555।।

अरदास

ब्रह्म सत्यम सरब आधार।
करो अरदास पावें जैकार।।
पुरख अनादी नित सम परकाश।
सरब जीयाँ में करे निवास।।
सब साजन मिल प्रेम से गाईयो।
आलख आपार मन माहीं ध्याईयो।।
नित आदेस नित प्रीत कमाओ।
रख विश्वास अभय पद पाओ।।
अजर अमर शकत निरवानी।
नित आनन्द परम सुख खानी।।
जो जन प्रीत से नाम ध्याये।
संकट नास परमगत पाये।।
अतुल शकत सरब का स्वामी।
सरब ज्ञाता सो पारगरामी।।
साध संगत मिल शबद ध्याओ।
पूर मनोरथ निज रूप समाओ।।

सरब व्यापक सरब अतीता।
तीन काल सो रहे पुनीता।।
घट घट की सब बनत बनाये।
अपरम अपार पुरख अगाये।।
नेहचल बुद्धि तत्त ज्ञान विचारो।
सत प्रकाश जोत निरधारो।।
करता हरता सरब सुख दानी।
ब्रह्म सत्यम जप पद निर्वानी।।
सूक्ष्म अस्थूल इक सूत परोई।
सरब आधार शकत नित सोई।।
मन पुनीत मुख बोल पुनीता।
अखय शबद नित जाप जगदीशा।।
करो प्रणाम तिस पुरख के चरना।
नित रखयक प्रभ कारन करना।।
पल पल घड़ी जप नाम सुख रासी।
भाओ भगत ले मिटे चौरासी।।
पूरन पुरख को बन्दिये।
नित धर निर्मल चीत।।
'मंगत' अरदास बखानिये।
रख सतगुरु की परतीत।।338।।

सत् सरूप चिंतवन की भावनायें

तूँ कर्ता, तूँ हर्ता, सर्व तेरी आज्ञा, तूँ नित रखयक, तूँ नित सहायक, तूँ दीनदयाल, तूँ नित बख़्शनहार, जो तेरी आज्ञा, तूँ नित पतित–पावन, तूँ नित सर्व–आधार, तूँ नित संग–वासी, तूँ ही अविनाशी, तूँ ही सर्व आद, तूँ ही नित अनाद, तूँ ही परम पिता, तूँ ही जगदीश्वर, तूँ ही गोविन्द, तूँ ही गोपाल, तूँ ही मंगलदाता, तूँ ही अनंत, तूँ ही बे–अन्त, तूँ ही अपार, तूँ ही दयाल, तूँ कर्ता, तूँ कर्ता, तूँ कर्ता, सर्व तेरी आज्ञा, जो तेरी कृपा, सर्व तूँ ही, सर्व तूँ ही, सर्व तूँ ही, आद–अन्त–मध्य तूँ ही, तूँ ही सत्, तूँ ही अगम, तूँ ही अवगत, तूँ ही स्वामी, तूँ ही अन्तर्यामी, तूँ ही कल्याण, तूँ ही जीवन, तूँ ही विधाता, तूँ ही अन्तर, तूँ ही बाहर, तूँ ही दीनानाथ, तूँ ही ज्ञान, तूँ ही विज्ञान, तूँ ही अगोचर, **तूँ ही नारायण, तूँ ही नारायण, तूँ ही नारायण।**

आरती

तूँ पार ब्रह्म परमेश्वर, तीन काल रछपाल।
नित पाऊँ शरनागती, सत चरण कँवल दयाल।।
तूँ नित पतित उद्धार है, पूरन प्रभ जगदीश।
मोह माया संकट हरो, दीजो ज्ञान संदेश।।
नित ही तेरे चरण की, मन में रहे परीत।
तूँ दाता दातार है, पुरुखोत्तम सुखरीत।।
पवन पानी बैसन्तर, धरती और आकाश।
सबको सरजनहार तूँ, आद पुरख अबनाश।।
घट-घट व्यापक तूँ परमेश्वर, सरब जियाँ आधार।
अनमत कूकर को राख लें, किरपा निद्ध करतार।।
काल करम जाए दूषना, खल बुद्धि हरो अज्ञान।
सत श्रद्धा पाऊँ चरण की, अखण्ड प्रेम चित्त ध्यान।।
दीनानाथ दयाल तूँ, पल पल होत सहाये।
कीरत साचे नाम की, मन तन आए समाये।।

अन्तर का सब खेद हरो, दीजो सत विश्वास।
शरणागत हूँ मंधमती, घट अन्तर करो परकास।।
अन्तरगत सिमरन करूँ, निरन्तर धरूँ ध्यान।
घट घट में दर्शन करूँ, आद पुरुख भगवान।।
तूँ साचा साहिब सरब परकाशी, शबद रूप अखण्ड।
गुनी मुनी उस्तत करें, तन मन पाएँ आनन्द।।
होवें दयाल तूँ सत परमेश्वर, देवें धीर आपार।
निमख निमख सिमरन करूँ, चित चरण रहे आधार।।
काया अन्तर परतख होवें, नाद रूप बिसमाद।
पल पल कीजूँ आरती, तन मन तजूँ व्याध।।
जग आवन सुफला होवे, तेरी आज्ञा मन में ध्याऊँ।
अन्तरगत करूँ आरती, भव दुस्तर तर जाऊँ।।
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत धर्म सुख सार।।
अन्धमत मूढ़ा नित प्रती, तेरे चरनी करे पुकार।
'मंगत' माँगे दीनता, सत धर्म सुख सार।।

समता मंगल

समता धर्म हृदय रसे, बिख ममता होवे नाश।
सत सरूप परमात्मा, जल थल पाऊँ परकाश।।
सब जीवों से प्रेम हो, तन मन सेवा धार।
समता साधन पाये के, नित परसाँ जै जैकार।।
सत कर्म सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार।
सत कर्म सत निश्चय, निर्मल पाऊँ विचार।
'मंगत' समता धार के, जीत चलो संसार।।

भारतवर्ष में अन्य स्थानों पर भी संगत समतावाद के आश्रम व सत्संग शालाएँ हैं, जिनके बारे में जानकारी व अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी निम्नलिखित आश्रम से ली जा सकती है।

HEAD OFFICE:
SANGAT SAMTAVAD
SAMTA YOG ASHRAM
CHACHHRAULI ROAD
JAGADHARI-135003
www.samtavad.org

मुख्य ऑफिस :
संगत समतावाद
समता योग आश्रम
छछरौली रोड
जगाधरी - 135003
www.samtavad.org